सबसे ख़तरनाक/पाश

अवतार सिंह पाश
पूंजीवाद व आंतकवाद से लड़ते हुए 23 मार्च, 1989 को शहीद हुए

मेहनत की लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे ख़तरनाक नहीं होती
ग़द्दारी और लोभ की मुट्ठी सबसे ख़तरनाक नहीं होती
बैठे-बिठाए पकड़े जाना बुरा तो है
सहमी-सी चुप में जकड़े जाना बुरा तो है
सबसे ख़तरनाक नहीं होता
कपट के शोर में सही होते हुए भी दब जाना बुरा तो है
जुगनुओं की लौ में पढ़ना
मुट्ठियां भींचकर बस वक़्त निकाल लेना बुरा तो है
सबसे ख़तरनाक नहीं होता

सबसे ख़तरनाक होता है मुर्दा शांति से भर जाना
तड़प का न होना
सब कुछ सहन कर जाना
घर से निकलना काम पर
और काम से लौटकर घर आना
सबसे ख़तरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना
सबसे ख़तरनाक वो घड़ी होती है
आपकी कलाई पर चलती हुई भी जो
आपकी नज़र में रुकी होती है

सबसे ख़तरनाक वो आंख होती है
जिसकी नज़र दुनिया को मोहब्बत से चूमना भूल जाती है
और जो एक घटिया दोहराव के क्रम में खो जाती है
सबसे ख़तरनाक वो गीत होता है
जो मरसिए की तरह पढ़ा जाता है
आतंकित लोगों के दरवाज़ों पर
गुंडों की तरह अकड़ता है
सबसे ख़तरनाक वो चांद होता है
जो हर हत्याकांड के बाद
वीरान हुए आंगन में चढ़ता है
लेकिन आपकी आंखों में
मिर्चों की तरह नहीं पड़ता

सबसे ख़तरनाक वो दिशा होती है
जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाए
और जिसकी मुर्दा धूप का कोई टुकड़ा
आपके जिस्म के पूरब में चुभ जाए

मेहनत की लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे ख़तरनाक नहीं होती
ग़द्दारी और लोभ की मुट्ठी सबसे ख़तरनाक नहीं होती ।

व्यंग्य / गणेश कै हाथी का सर किसनै लाया ?

हरियाणा के आर्यसमाजी भजनी नरसिंह जी हुए ।एक बार एक सभा मैं गणेश का जिक्र हुया तो एक टोटका सुनाया उणनैः

एक बार रोहतक के टेशन पर एक टी टी ला दिया। मकान मिलग्या। भैंस बांधली । मौज होरी थी। एक दिन टिकट काटते काटते नै देख्या अक भैंस तो ट्रैक मैं खड़ी सै। दिल्ली कान्ही की गाड्डी आवन लागरी थी। उसनै भाजकै जाकै भैंस कै धक्का मारकै ट्रैक तैं बाहर करण की सोची। भाजकै गया अर धक्का मारया । भारया थी । उल्टा वो खुद ट्रैक मैं घलग्या। ट्रेन आई अर दोनुआ नै बीच तैं काटगी। धोरे कै एक बड्डा पहोंचे औड़ बाबाजी जा था। उसनै सारा नजारा देख्या अर सैड़ दे सी तावल करकै भैंस का पाछा अर टी टी का आगा जोड़ दिया। मौज होगी टी टी की। दिन मैं टिकट काटै टेशन पै और तड़कै साँझ नै 10 किलो दूध काढ़ कै पीवै।

लोग बाग़ कहन्ते -- दादा या बात तो होण की कोण्या।

नरसिंह भजनी कहते- फेर गणेश कै हाथी का मुँह क्यूकर लॉग सकै सै?

-रणबीर

आज़ादी के लिए अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना खून बहाया है, जिनमें से एक जांबाज़ थे सूर्य सेन

सूर्य सेन ने मरते दम तक न सिर्फ़ ब्रिटिश राज के खिलाफ़ आवाज़ उठाई, बल्कि कई बार गहरी चोट भी दी। वह क्रांतिकारी होने के साथ-साथ मानवता में भी विश्वास रखते थे और अक्सर कहा करते थे- "मानवतावाद एक क्रांतिकारी का विशेष गुण है।"

सूर्य सेन का जन्म 22 मार्च 1894 को हुआ था और शुरुआती पढ़ाई चटगाँव में हुई। उन्होंने 22 साल की उम्र में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की और बहरामपुर कॉलेज से बीए की डिग्री ली। वह चटगाँव के नाओपोरा (अब बांग्लादेश) में एक स्कूल टीचर थे। सेन को प्यार से 'मास्टर दा' के नाम से जाना जाता था। अपने शिक्षक से प्रेरित होकर वह अनुशीलन समिति में शामिल हुए थे, जो शरत चंद्र बसु के नेतृत्व में एक क्रांतिकारी संगठन था।

सूर्य सेन ने बंगाल में असहयोग आंदोलन का नेतृत्व करने वाले एक अन्य क्रांतिकारी चित्तरंजन दास के साथ भी काम किया।

1918 में चंटगांव वापस आकर उन्होंने स्थानीय युवाओं को अपने साथ मिलाया और युगांतर पार्टी की स्थापना की। धन और हथियारों की कमी को दूर करने के लिए सेन ने गणेश घोष, लोकनाथ बाल, अनंत सिंह जैसे क्रांतिकारियों का एक ग्रुप बनाया और 18 अप्रैल, 1930 की आधी रात को चटगांव में हथियारों के गोदाम पर हमला कर दिया। इस पूरे क्रांतिकारी कांड में सूर्यसेन के 65 छात्र भी शामिल थे।

16 फरवरी, 1933 को एक दोस्त के विश्वासघात के कारण उनको गिरफ़्तार कर लिया गया और उन्हें जेल में बहुत-सी यातनाएं दी गईं। 12 जनवरी, 1934 को उन्हें फांसी होने तक मास्टर सूर्यसेन ने अनेक संकट झेले। मास्टर सूर्यसेन ने फांसी के एक दिन पूर्व 11 जनवरी, 1934 को अपने एक मित्र को अंतिम पत्र लिखा था। इसमें उन्होंने लिखा- "मृत्यु मेरा द्वार खटखटा रही है। मेरा मन अनंत की ओर बह रहा है। मेरे लिए यह वह पल है, जब मैं मृत्यु को अपने परम मित्र के रूप में अंगीकार करूं। इस सौभाग्यशील, पवित्र और निर्णायक पल में, मैं तुम सबके लिए क्या छोड़ कर जा रहा हूं? सिर्फ़ एक चीज़- मेरा स्वप्न, मेरा सुनहरा स्वप्न, स्वतंत्र भारत का स्वप्न। प्रिय मित्रों, आगे बढ़ो और कभी अपने कदम पीछे मत खींचना। उठो और कभी निराश मत होना। सफलता अवश्य मिलेगी।"

- साइबर नजर

क्या आप अनुभव सिन्हा की 'भीड़' के साथ हैं?

यूसुफ किरमानी

दो सूचनाओं पर आप ग़ौर फ़रमा सकते हैं।

डायरेक्टर अनुभव सिन्हा ने एक फ़िल्म बनाई भीड़। यह लॉकडाउन के दौरान बिहार-यूपी के मज़दूरों के बड़े शहरों को छोड़कर अपने गाँव लौटने की कहानी है।

इस फ़िल्म के ट्रेलर को बीती रात यानी गुरुवार की रात सोशल मीडिया और अन्य मंचों से हटवा दिया गया। इस फ़िल्म में पैसा लगाने वाले टी सीरीज़ भी इस मामले से पीछे हट गया।

इस फ़िल्म में प्रवासी मज़दूरों की सच्ची कहानी है। इसमें कोरोना फैलाने के लिए मुसलमानों को ज़िम्मेदार ठहराने वाले भगवा झूठ का सच बयान किया गया है। इसमें सूटकेस पर सोते बच्चे, इसमें साइकिल से पूरे परिवार को ढोते मज़दूर, इसमें भूखे प्रवासी मज़दूरों को रोककर मुस्लिम युवकों द्वारा उनके लिए पानी और खाने का इंतज़ाम करते जत्थे की कहानियाँ हैं।

चूँकि मैं एक पत्रकार हूँ तो इन घटनाओं का चश्मदीद भी हूँ। हम लोग इन तथ्यों को फ़ोटो वीडियो के साथ बता चुके हैं लेकिन अनुभव सिन्हा के कहानी बताने का अंदाज निराला है। अनुभव सिन्हा का अनुभव एक-एक किरदार के साथ सामने आया है।

पता नहीं ये फ़िल्म रिलीज़ हो भी पाएगी या नहीं। अनुभव सिन्हा इससे पहले आर्टिकल 15 और मुल्क जैसी फ़िल्म बना चुके हैं।

मैं फ़िल्म पर अक्सर नहीं लिखता हूँ लेकिन कभी कभी अनुभव सिन्हा जैसों का पक्ष लेना पड़ता है।

राहुल गांधी के लंदन वाले भाषण में क्या था ?

राहुल ने भारत की हक़ीक़त बताई थी।

उसमें यही तो था कि आज़ाद भारत में भीड़ जैसी फ़िल्म के ट्रेलर मात्र से कच्छा बनियान गिरोह डर जाता है। पठान जैसी फ़िल्म में एक खास रंग दिखाए जाने से दंगाइयों की आत्मा बिलबिला उठती है।

भीड़ का ट्रेलर हटते हुए हम देख रहे हैं और कच्छा बनियान गिरोह लोकतंत्र की दुहाई दे रहा है।

यह गिरोह बहुसंख्यकवाद की तानाशाही को ही सच्चा लोकतंत्र मानने पर ज़ोर दे रहा है।

बहुसंख्यक गुंडागर्दी में 'भीड़' जैसी फ़िल्म, अनुभव सिन्हा जैसे डायरेक्टर, राहुल गांधी जैसे नेता, शाहरुख़ खान जैसे अभिनेता का लोकतंत्र, उनका वजूद कोई मायने नहीं रखता।

उसमें हमारी सीमा में कोई आया ही नहीं जैसे झूठ मायने रखते हैं। उसमें मेहुल चौकसी जैसे फ्राड मायने रखते हैं। जिन्हें कभी एक गुजराती 'महामानव' ने सरकारी कार्यक्रम में अपने मेहुल भाई कहा था। जिसमें किसी चौराहे पर खुद को जूते से पीटे जाने की बात कही थी।

दूसरी सूचना पर आते हैं। मीडिया में खबर फैलाई गई कि भारतीय 'महामानव' को नोबेल का शांति पुरस्कार देने पर विचार हो रहा है। यह खबर कच्छा बनियान गिरोह के आईटी सेल ने फैला दी। भारतीय चाटू मीडिया ने फ़ौरन उस सूचना को ग्रहण किया और फैला दिया।

कुछ ही देर में खंडन आ गया कि भारतीय महामानव को किसी भी तरह का नोबेल देने पर विचार दूर दूर तक नहीं हो रहा है। कच्छा बनियान गिरोह और उसका आईटी सेल अब बचाव के तर्क तलाश रहा है।

कच्छा बनियान गिरोह का यह पहला कांड नहीं है। इसी गिरोह के सदस्य किसी अग्निहोत्री ने अपनी फ़िल्म को ऑस्कर समारोह में भेजे जाने की घोषणा की थी जो फ्लॉप रही।
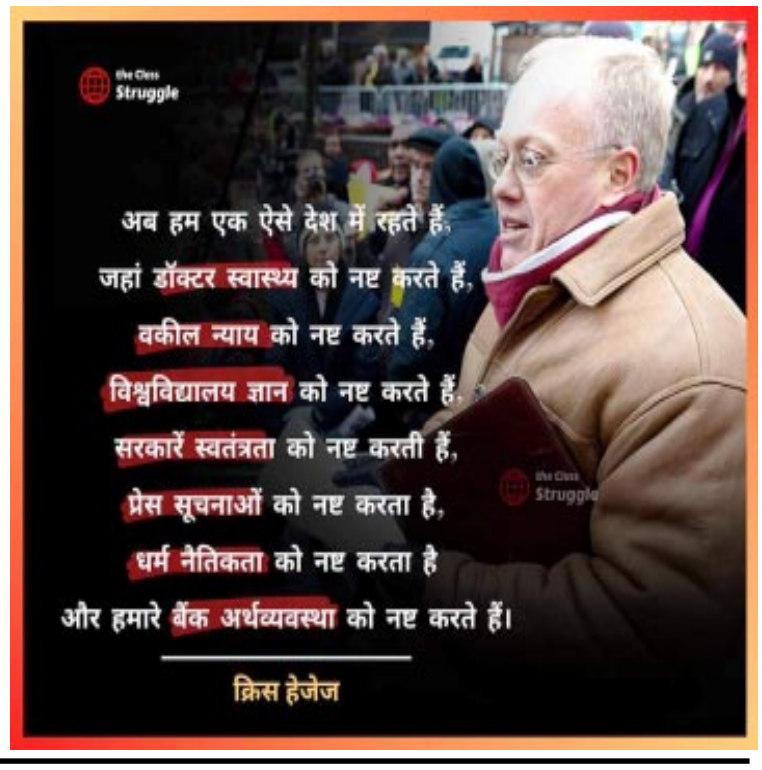
तो यह कच्छा बनियान गिरोह जाने कब से अफ़वाहों की दुकान चला रहा है। यह गिरोह एक देश में मूर्तियों को दूध पिलाने का राष्ट्रीय कारनामा तक कर चुका है। बहुसंख्यक आज भी उसे महान कारनामा मानता है।